International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 740-743

आदी और खड़ी बोली के विवाह सम्बन्धी संस्कार लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

विजय कुमार यादव

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति एवं खड़ीबोली के विवाह संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। विवाह हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंश है। संसार के हर एक जातियों में विवाह संस्कार किसी न किसी रुप में पायी जाती हैं। विवाह संस्कार में स्त्री - पुरुष दोनों की समान महत्व होती है।

मूल शब्द : विवाह संस्कार, गृहस्थाश्रम, प्रथाओं, सगाई, मढ़ा, भात न्यौतना, नेग, बारात, घुड़चढ़ी, चूड़ी, पाणिग्रहण, कन्यादान, विदाई, करुणापूर्ण, उबटन

प्रस्तावना

विवाह को मानव- जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार कहां जाता है। संसार के सभ्य, अर्द्धसभ्य और असभ्य सभी जातियों में यह संस्कार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। मनुष्य - जीवन में विवाह का जितना महत्व है उतना अन्य किसी भी संस्कार का नहीं है। जन्म आदि संस्कारों के बाद सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्कार है, विवाह। यह संस्कार सामाजिक एवं धार्मिक दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। विवाह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का द्वार है, जिसके अन्दर प्रवेश करने पर विशाल कर्म- क्षेत्र मनुष्य का प्रतिक्षा करता है। इस कर्म- भूमि पर स्त्री- पुरुष दोनों को ही समान रुप से एक- दूसरे की जरुरत होती है। सम्पूर्ण विवाह में शास्त्रीय संस्कार तो केवल पाणिग्रहण संस्कार ही है जिसको किसी निश्चित शुभ मूहूर्त्त देखकर के विद्वान पंडित द्वारा वैदिक मंत्रो के उच्चारण के साथ सम्पन किया जाता है, अन्य सभी तो लौकिक, सामाजिक व सांस्कृतिक महत्व की प्रथाएँ ही हैं। इन प्रथाओं में अधिकतर स्त्री से संबंध रखते है और कुछ का पुरुषों से भी है। इन प्रथाओं को दो भागों में विभाजन कर सकते हैं- कन्या- पक्ष के यहाँ सम्पन्न होने वाली प्रथाएँ तथा वर- पक्ष के यहाँ सम्पन्न होने वाली प्रथाएँ। देश, काल, जाति में भिन्नता होने के कारण रीति- रिवाजों में भी पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। कन्या पक्ष के यहाँ गाये जाने वाले गीत तथा वर पक्ष के यहाँ गाये जाने वाले गीतों का विभाजन डॉ. परवीन निजाम अंसारी ने निम्नलिखित प्रकार से किए है –

कन्या पक्ष के गीत

(1) तिलक के गीत
(2) संझा के गीत
(3) माँड़ो के गीत
(4) माटी कोड़ाई के गीत
(5) कलसा धराई के गीत
(6) हरदी के गीत
(7) लावा भुँजाई के गीत
(8) मातृ- पूजा के गीत
(9) द्वार- पूजा के गीत
(10) गुरहत्थी के गीत
(11) विवाह के गीत
(12) भँवर के गीत
(13) चूमने के गीत
(14) द्वार रोकने के गीत
(15) कोहबर के गीत
(16) परिहास के गीत
(17) भात के गीत
(18) वर को उबटन लगाने के गीत
(19) माँड़ो खोलाई के गीत
(20) बारात के विदाई के गीत
(21) कंगन छुड़ाई के गीत
(22) चौथारी के गीत

वर पक्ष के गीत

(1) तिलक के गीत
(2) सगुन के गीत
(3) भतवानि के गीत
(4) माटी कोड़ाई के गीत
(5) लावा भुँजाई के गीत
(6) इमली घोटाई के गीत
(7) हरदी के गीत
(8) मातृ- पूजा के गीत
(9) वस्त्र- धारण के गीत
(10) मउरि के गीत
(11) परिछावन के गीत
(12) डोमकछ के गीत
(13) गोड़भराई के गीत
(14) कोहबर के गीत

(15) कंकन छुड़ाई के गीत
(16) चौथारी के गीत

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विवाह सम्बन्धी विभिन्न विधियों के समय गाये जाने वाले कन्या पक्ष के गीतों के भेद 22 हैं और वर पक्ष के 16 प्रकार के हैं। कन्या पक्ष के गीतों के भेदों में अधिकता होने का मुख्य कारण यह हैं कि बारात के आने पर समस्त वैवाहिक कार्य को कन्या के घर पर ही किया जाता है। कन्या पक्ष के गीत बड़े ही करुण और मर्मस्पर्शी होते हैं। पुत्री के लिए वर खोजने तथा उसके विवाह में पिता को जितनी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, उनका संकेत इनमें उपलब्ध होता है -

" दिनवा हरेलू ए बेटी भुखिया रेपिअसिया
रतिया हरेलू आँखि निनियाँ नु हो।" [1]

इन गीतों मे कितनी वेदना भरी हुई है। कुछ सामाजिक एवं लोकाचार संबंधी प्रथाएँ तो विवाह निश्चित होने के दिन से ही आरम्भ हो जाती है। इनमें सबसे पहला प्रथा है रोपना या रोकना। इसके अंतर्गत लड़के तथा लड़की को एक- दूसरे के लिए प्रतीक्षा करने को कहते है। इस अवसर पर वर- पक्ष की ओर से कुछ स्त्रियाँ व पुरुष कन्या को देखने जाते हैं तथा कन्या को आभूषण, जोड़ा, कुछ फल, मेवा- मिठाई, चूड़ी- बिंदी आदि श्रृंगार की वस्तुओं से गोद भरते हैं। और फिर कन्या- पक्ष वाले भी वर को यथासामर्थ्य धनराशि मिठाई तथा फल आदि भेंट करते है। इसके बाद कुछ समय पश्चात् कन्या एवं वर पक्ष के सुविधानुसार सगाई संस्कार होता है।
सगाई के अवसर पर कन्या पक्ष वाले धन, फल, मिठाई, जोड़े तथा अन्य वस्तुएँ यथासामर्थ्य भेजते हैं तथा कभी- कभी उसके साथ एक पत्र भेज देते है जिसे ' लगन' कहते है। इस लगन पत्र में कन्या पक्ष वाले वर पक्ष से प्रार्थना करते हुए किसी अमुक तिथी पर विवाह के लिए पधारने के लिए कहते है। सगाई के बाद हलद होता है। यह 8, 7 या 5 दिनों की होती है। इस अवसर पर नायन तथा अन्य संबंधी भी लड़की के शरीर पर हल्दी चढ़ाते है। हल्दी को बहुत ही गुणकारी माना जाता है। इस सम्बन्ध में डॉ. सत्या गुप्ता लिखते है – "इसका प्रयोग अनेक रोगों में किया जाता है तथा इसके प्रयोग से छूत की बीमारी होने की आशंका भी नहीं रहती। विवाह के अवसर पर लड़के व लड़की को नये ग्राम व शहर में जाना होता है – इसी से रोगों से बचाव के हेतु ही इसका यह वैज्ञानिक प्रयोग- बहुत प्राचिन काल से प्रचलित है। इससे त्वचा मुलायम, साफ तथा सौन्दर्यपूर्ण भी हो जाती है।"[2]
कन्या के श्रृंगार तथा भावी जीवन की मंगलाकाक्षा से संबंधित एक गीत इस प्रकार है -

" नाजो ठाढ़ि अटरियाँ सोहाग भरी
तेरे माथ सोहे हो सोने का टीक
तेरे कान सोहे सुंदर झुमका
तेरे पतिया में हाँ तेरे कुंडल में लागी मोतिन की लड़ी बन्नी
ठाढ़ि अटरियाँ ..... । "[3]

विवाह संस्कार के अंतर्गत 'मढ़ा' भी एक महत्वपूर्ण संस्कार है। इस अवसर पर परिवार के सभी लोग भाग लेते है। मढ़े में 5 या 7 सरकंडे होते हैं। सराई में सुपारी, हल्दी की गाँठ रखकर तथा लाल कपड़ा रखकर कलावे में पिरोकर दोनों सिरों पर बाँध देते तथा उन सरकंडो में पाँच, सात अथवा नौ स्थानों पर कलावे से गाँठ लगा दी जाती है, फिर उसको उठा कर टेहले वाले कमरे के बाहर खूँटी पर रख दिया जाता है। कन्या के विवाह में इसका अर्थ लिया जाता है कि कन्या का विवाह छप्पर के समान है जिसको सब मिलकर कंधे पर उठाते हैं। इस प्रकार लड़की के विवाह में सभी मिलकर कार्य करते हैं। कन्या तथा पुत्र के विवाह की तिथि निश्चित होने के बाद माँ अपने पीहर भाइयों को विवाह में आने का निमंत्रण देने जाती है। अपने साथ मिसरी के कूजे, मेवा, मेहंदी, कलावा, रोली, एक चिट्ठी आदि ले जाती है, इसको 'भात न्यौतना' कहते हैं। भात के अवसर से सम्बन्धित इसी वर्ण्यविषय के बहुत से गीत हैं। इनका वर्ण्य- विषय होता है भाई से विवाह में सहायता देने की प्रार्थना करना। इनमें बहिन अपनी आर्थिक असमर्थता तथा सामाजिक कटु- आलोचनाओं के भय का भी उल्लेख करती है। भाई यथाशक्ति अपने सामर्थ्यानुसार आभूषण व वस्त्र लेकर विवाह के एक- दो दिन पहिले पहुँचता है और वहाँ पर उसका उचित स्वागत होता है। लड़की के विवाह में वह जोड़ा, पायजेब, बिछुए, नथ आदि तो लाता ही है, इसके अतिरिक्त, सामर्थ्यानुसार और भी वस्तुएँ लाता है। बहिन द्वार पर भाई तथा भाई के परिवार की आरती करके घर में प्रविष्ट कराती है। घर में भाई को बूरा तथा सुहाली खिलाई जाती है और नाई उस समय भाई का अंगूठा धोता है जिसका कि उसको उचित नेग मिलता है। इस अवसर पर भाई को ' सीठने' भी दिये जाते हैं जो कन्या की चाची, ताई, भाभी आदि सम्बन्धि देती हैं। उदाहरण के लिये -

" भातियों की मूंछ जैसे कुत्ते की पूंछ
मत पाड़ियो रे लाल, वो तो विचारा गरीबड़ा
तथा –
भातियों के कान जैसे फुट्टी दुकान
गधे मत बाड़ियो रे लाल, वो तो बिचारा गरीबड़ा। "[4]

इसी प्रकार भात के अवसर पर गाये जाने वाले एक गीत इस प्रकार हैं –

" झूमर तो पिया तुम गढ़वाओ
बिन्दी लावैं मेरे भातइया
चल चुप रह नार देखे तेरे भातइया
पांच का लावैं पच्चीस ले जावें
देखे तेरे भातइयां---------- ---------- ।
टिक्का भी लइयो भय्या, झुमर भी लाइयो
बिन्दी पै रतन जड़इयो
भय्या भात सवेरा लाइयो---------- ।
अब मैं लिख डालंलू परवाना
नरसी भात ले आना
रुपय्या धेला बाबुल मेरे मत लाना
नोट्टों के लाड़ लड़ाना ---------- ।"[5]

कन्या को प्रतिदिन उबटन का तेल मला जाता है । इसका उद्देश्य कन्या की सौन्दर्य बृध्दि करना और उसको आकर्षक बनाना भी होता है। इससे सम्बन्धित कुछ गीत देखिये –

" चन्दन चौकी बैठी है लाड्डो
केस दिए छिटकाए
लाड्डो के बाब्बा यूं उठ बोले
अब तो सरस करलो लाडली ---------- ।
लाड्डो मेरी केले की गोब,
नैन वा के नन्दा चकोर
माथ लाड्डो के टीक्का सोहे
बिन्दी से नाच रहे मोर ---------- ।"[6]

घुड़चढ़ी भी विवाह संस्कार का एक महत्वपूर्ण अंग है । विवाह के पहले दिन या उसी दिन वर की घुड़चढ़ी होती है। घुड़चढ़ी के पश्चात् वर अपने घर वधू को बिना साथ लाये नहीं लौटता, अत: किसी मित्र के घर या मन्दिर में ठहर जाता है और वही से वर – यात्रा में शामिल होता है । वर को सबसे पहले घोड़े पर चढ़ाकर मन्दिर में ले जाता है तथा वहां उससे पूजा दान कराया जाता है । घुड़चढ़ी के अवसर पर लड़के के सभी सगे- सम्बन्धि टिका करते हैं और गीत गाते हैं । यह घोड़ी- बन्ना- सेहरा आदि कहलाते हैं। इस अवसर पर वर का छोटा भाई या बहन को भी घोड़े पर बिठाया जाता है । इसी अवसर पर माँ कुए में पैर डालकर बैठती है । 'दूध- पिलाई' का नेग मांगती है । भाभी काजल लगाती है । इस अवसर पर गाये जानेवाले गीत इस प्रकार हैं –

मोतियन बेला चमेली का गुंयाया सेहरा
बाब्बा ने ताऊ ने खड़े हो के गुंथाया सेहरा
दादी ने ताई ने कलेजे से लगाया सेहरा ---------- ।
घोड़ी बने की आ गई, देखो कैसी सजे
सीस बने के चीरा सौहे पेंची पै हीरे जड़े
अंग बने के जामा सौहे कुण्डल पै लाल जड़े---------- ।
बना मेरा चांद पूनो का
निकल आया निकल आया
बने के सीस पर चीरा
बने के मुखड़े पर सेरा
सिहाया देख मन मेरा ---------- ।"[7]

बारात के चले जाने के बाद घर एवं आस- पास की सभी स्त्रियाँ मिलकर एक प्रथा मनाती हैं जिसे ' कोयल' कहते है । इस अवसर पर कोई ब्राहम्णी नाई बन जाती है और सबको बारात का हाल सुनाती है । इसके बाद ' चूड़ी' पहनी जाती है । एक ब्राहम्णी मनिहार का वेश बना कर हरी चुड़ियाँ, बैंजनी चुड़ियाँ, कहकर आवाज लगाती है और उसे घर में बुला लिया जाता है । घर में आने पर उससे सब से पहिले बहू का जोड़ा बँधवाते हैं । 'चूड़ियाँ वाली' बहुत मजाकिया स्त्री बनती है । चूड़ियाँ पहनाते समय वह कहती है – ये हरी – हरी चुड़ियाँ तुम पहनो सुहागन चूड़ियाँ, इसके बाद चूड़ी पहनाती जाती है और घर के प्रत्येक पुरुष का नाम ले- लेकर उहकी स्त्री को उसकी चूड़िया पहनाती है । स्त्रियाँ अपने – अपने देवरों, पुत्रों के नाम की भी चूड़ियाँ पहनती हैं । चूड़ी पहनाते समय चूड़ीवाली यह गाना गाती है -

" जगदीश की पौड़ी पौड़ा रे, मनिहार लला
कला का हाय हठीला रे, मनिहार लला
कला पहिरन बैठी रे, मनिहार लला
वो तो बड़ी ही हठीली रे, मनिहार लला ।"[8]

ये चूड़ियाँ वास्तव में नहीं पहनाई जाती हैं । यह सब एक नाटक के रुप में अभिनय किया जाता है । सभी कन्यायें अपने लिए सुन्दर वर की कल्पना करती है । इस गीत में कन्या अपने पिताजी से सुन्दर वर के लिए कहती है कि –

" कहो बेटी गौरा कैसा वर ढूँढ़े जी राज ।
काला मत ढूढ़ो बाबे, कुल को लजावौ री राज ।
गौरा मत ढूंढ़ो बाबे, चलत पसीजे जी राज ।
छोटा मत ढूंढ़ो बाबे, सब गुना खोटा जी राज ।
लम्बा मत ढूंढ़ो बाबे, सैफल तोड़े जी राज ।
जोड़ी वर ढूंढ़ो बाबे, पार लगावै जी राज ॥"[9]

विवाह संस्कार का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, पाणिग्रहण संस्कार । इस संस्कार को किसी निश्चित मुहूर्त को देखकर के विद्वान पंडितों द्वारा वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ कराया जाता है । इस अवसर पर वर- वधू अग्नि के सामने समाज को साक्षी मानकर प्रतिज्ञाएँ करते हैं । इस संस्कार को 'कन्यादान' भी कहते है । कन्यापक्ष में गुरुजन पूरे दिन व्रत रखते हैं तथा कन्यादान सम्पन्न हो जाने के पश्चात् ही भोजन करते हैं । विवाह के समय अन्य- विधि- विधानों के अतिरिक्त 'कन्यादान' मुख्य होता है । विवाह के समय जितने भी छोटे- बड़े संस्कार होते हैं उन सभी का मुख्य केन्द्र यही संस्कार है । कन्यादान का दृश्य बहुत ही कारुणिक होता है । पिता अपनी लाडली बेटी को सदा के लिए किसी पराये के हाथों में दे देता है । इस अवसर पर गाये जाने वाले गीत का एक उदाहरण है –

" ऊंच ऊंच बखरी उठाओ मोरे बाबा ऊंच ऊंच राखो मोहार ।
चांद सुरुज दोनों किरनी बसत हैं निहरै न कन्त हमार ।
अम्मर सेनुरा मंगावो मोरे बाबा पिया से भरावो मोरी मांग ।
सूघर बंभना से गंठिया जोरावहु जनम जनम अहिबात ॥
अम्मर डंड़िया फनाओ मोरे बाबा बिदवा करावो हमार ।
सात परग संग चलि के हो बाबा अब मैं भइउं पराइ ॥"[10]

कन्या की विदाई का दृश्य बड़ा ही कारुणिक होता है । एक गीत में कोई पुत्री अपनी उपमा चिड़िया से दे रही है जो हाथ उठाने पर उड़ जाती है । फिर वह अपनी समता उस गाय से करती है जो जिधर हाँकिये उधर ही चली जाती है । यह गीत बड़ा ही करुणा पूर्ण है –

" काही को व्याही विदेश, रे सुन बाबुल मेरे ।
हम तो रे बाबुल झाँबे की चिड़िया,

हाथ उठाये उड़ जाय। रे सुन.
हम तो बाबुल तेरे खिरक की गइयाँ,
जित हाँको हँकि जाय। रे सुन.
बिरन को छाई है लाल अटारी,
हमको छ्या परदेस। रे सुन.
छज्जे तले मेरी निकली पलकिया,
बिरन ने खाई है पछाड़। रे सुन.
खोल उघरवा जो देखन लागी,
छूटा बाबुल का देश। रे सुन. ..... ।"[11]

काँपते स्वरों में गाया जाने वाला यह लोक- गीत करुण रस से ओत- प्रोत है। विवाहिता बालिका की मनोदशा का चित्रण इसमें बड़े ही सुन्दर रंगो से किया गया है। कन्या अपने को झाँवे चिड़िया कहती है जो फुर्र से उड़ जाती है और पिछे फिर नहीं देखती। कन्या का विदाई का दृश्य करुणापूर्ण होता है। सम्पूर्ण नारी एवं पुरुष समाज के लिए आत्मसंयम की परीक्षा होती है विदाई समारोह। जो पिता जीवन के बड़े से बड़े संकट के समय भी अपनी धैर्य नहीं खोता है, पत्थर के समान कठोर होता है और अपने ऊपर पूरा संयम रखता है, वही पिता कन्या की विदाई के समय बच्चों की तरह बिलख उठता है तथा उनका सारा संयम टूट जाता है। कन्या- पक्ष वाले तो अपना सब कुछ अर्पण कर चुके होते हैं। कन्या अपने लखपती बाप से व्यंग्य करते हुए प्रश्न करती है कि किस कारण मुझे यह परदेश मिल रहा है। मेरे साथ ऐसा भेद- भाव किस लिए किए जा रहे है। यह भाव इस गीत में बहुत ही भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया है –

" काहे को व्याही विदेश, रे लक्खी बाबुल मेरे
भइयों को दीन्हें महल दुमहले, हमको दियो परदेस रे।"[12]

आदी जनजाति के गीतों में शादी के समय इतने नेगाचार – लोकाचार प्रचलित नहीं हैं। कन्या को अपने लिए वर चुनने की स्वतंत्रता होती है। माता – पिता भी अपनी बेटी के लिए वर की तलाश करते हैं परन्तु ऐसा करते समय कन्या की सहमति पर भी ध्यान दिया जाता है। पहले अपहरण द्वारा भी विवाह की प्रथा प्रचलित थी परन्तु अब यह प्राय: समाप्त हो गया है। आदी जनजाति में प्रमुख रुप से प्रेम विवाह पाया जाता हैं। लड़का एवं लड़की आपस में एक – दुसरे को पसन्द करते है तथा बाद में अपने माता – पिता को अपने प्रेम के बारे में बताते है। इसके बाद लड़के वाले भेंट के रुप में आपोंग, सूखी गिलहरी – केका, सूअर का माँस, पिसा हुआ अदरक आदि वस्तुओं को लेकर लड़की के घर जाते हैं।

आदी जनजाति के विवाह में उबटन, हल्दी, मांडव, तिलक, सेहरा, घोड़ी, सिन्दूर दान आदि रिवाज नहिं होता है। लेकिन अपनी रीति- रिवाज के अनुसार लड़कीवाले को दी हुई वस्तुओं पर पोनुंग लोकगीत गाते हैं। इतना ही नहीं, लड़की को मामा की ओर से धान, मकई, बाजरा, मड़वा आदि अनाजों का बीज दिया जाता है। ताकि बेटी अपने नए घर में जाकर खेतों में उसे उगा सके। विवाह से पहले शगुन के तोर पर लीपो, चावल, पेय अदरक (पिसा हुआ अदरक में अंडा या मांस मिश्रन करके) आदि वस्तुओं को लेकर लड़की के घर में लड़के वाले जाते हैं। उन्हीं वस्तुओं के महत्व पर आधारित यह गीत इस प्रकार है -

केयुम मिती मोने के
ओमुम पीसाए दूदाक देलो
मिती लालूए रीबोक कूने
मिती नामीए बोबी नो
आदेंग मुकसूंग ए ग्यादूने।"[13]

आदी जनजाति के विवाह के गीतों में खड़ीबोली के लोकगीतों जैसी विविधता नहीं है। विवाह की रस्म भी बहुत ही सरल होती है। विवाह ही रस्म संपन होने के पश्चात सामूहिक भोज होता है जिसमें सूअर का माँस, मछली, मुर्गा आदि मदिरा के साथ आनन्द एवं उत्साह के साथ खिलाया- पिलाया जाता है।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि खड़ीबोली और आदी लोकगीतों और विवाह संस्कार से जुड़ी प्रथाओं और परम्पराओं में पर्याप्त अन्तर है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक- साहित्य की भूमिका , साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद , पृ. 70- 71
2. सत्या गुप्ता, खड़ी बोली का लोक साहित्य, हिन्दुस्तान एकेडेमी, इलाहाबाद, सन्- 1964, पृ. 47
3. डॉ. हिरालाल तिवारी, गंगाघाटी के गीत, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्कण- 1980, पृ. 96
4. उपरि संख्या- 2, पृ. 48
5. डॉ. कविता त्यागी, कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1995, पृ. 61- 62
6. वही, पृ. 59
7. वही, पृ. 62- 63
8. उपरि संख्या – 2, पृ. 50
9. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1990, पृ. 299
10. लोकगीत संकलन, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, प्रथम संस्करण- 1989, पृ. 30
11. उपरि संख्या- 9, पृ. 303
12. उपरि संख्या- 2, पृ. 55
13. जेबिना ताकी, आदी लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन (लोकगीतों के विशेष संदर्भ में), शोध- प्रबंध, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, पृ. 190